Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का कार्य के प्रति दृष्टिकोण : सर्वेक्षण आधारित अध्ययन

डॉ. उमा श्रीवास्तव*

* सहायक प्राध्यापक, शासकीय अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, देवास (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – समर्पण भाव से किये गये किसी भी कार्य का परिणाम गुणवत्ता पूर्ण ही होता है और समर्पण भाव की उत्पत्ति कार्य की संतुष्टि से ही उत्पन्न होती है। शिक्षक समाज में वह व्यक्तित्व है, जो राष्ट्र निर्माता के रूप में अपनी भूमिका निभाता है। वे अपने विद्यार्थियों को न केवल केवल गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि वे मार्गदर्शक, परामर्शदाता, मनोवैज्ञानिक, प्रेरक आदि के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाते हैं। शिक्षित समाज की नींव में भी शिक्षकीय व्यवसाय का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षकीय कार्य के प्रति दृष्टिकोण व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, सामान्य रूप निम्नलिखित आयामों के आधार पर प्रभावित होती है –

1. कार्य की संतुष्टि 2. कार्य का अनुभव 3. कार्य क्षेत्र का वातावरण 4. विकास के अवसर 5. कार्य की प्रेरणा

प्रस्तुत अध्ययन विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य के प्रति दृष्टिकोण का सर्वेक्षण पर आधारित विश्लेषण है। इस अध्ययन हेतु शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् 100 शिक्षकों (जिसमें महिला एवं पुरूष दोनों शामिल हैं) का चयन किया गया। शोधकर्ता द्वारा चयनित प्रत्येक आयाम के विश्लेषण हेतु स्वनिर्मित 10–10 कथनों की कथनावली का निर्माण कर प्रशासित किया गया। ये कथन 5 बिन्दु लिकर्ट स्केल आधारित थे। प्राप्त निष्कर्षों में अधिकांश न्यादर्शों का दृष्टिकोण शैक्षिक कार्य के प्रति सकारात्मक पाया गया।

शब्द कुन्जी – कार्य संतुष्टि, कार्य के प्रति दृष्टिकोण।

प्रस्तावना – विकासशील राष्ट्र की आधारशिला शिक्षा है और शिक्षक राष्ट्र निर्माता माने जाते हैं। अत: शिक्षक राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में रीढ़ की हड्डी की भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों के प्रेरणा का स्तर और विद्यार्थियों के सीखने के परिणाम उनके अपने कार्य अनुभव को प्रदर्शित करती है।

किसी भी कार्य अथवा नौकरी का मूल्यांकन विभिन्न कारकों जैसे – कार्य संतुष्टि, कार्यानुभव, विकास के अवसर, कार्य प्रेरणा और कार्य वातावरण आदि के समग्र प्रभावों के आधार पर किया जाना चाहिए। शिक्षकीय कार्य एक आदर्श पेशा है, जहाँ शिक्षक का भावनात्मक जुड़ाव और अपने कार्य के प्रति ईमानदारी, निष्पक्षता और कर्तव्यनिष्ठता की अत्यंत आवश्यकता होती है।

अत: शिक्षक के शिक्षण कार्य को प्रभावित करने वाले कारक यदि उसकी अभिवृत्ति व रूचि अनुरूप होगें, वह गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण कार्य के प्रति प्रतिबद्ध भी होगा।

समस्या कथन – शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का कार्य के प्रति दृष्टिकोण : सर्वेक्षण आधारित अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. शिक्षकों के कार्य के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।
2. शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के उक्त कारकों का मूल्यांकन करना।
3. कारकों के बीच सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
4. शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की समग्र कार्य के दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना।
5. शिक्षकों की कार्य बोध में सुधार हेतु सुझाव देना।

परिभाषायें – अध्ययन में प्रयुक्त नवीन शब्दों की परिभाषायें निम्नानुसार हैं–

कार्य संतुष्टि – कार्य संतुष्टि वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपने कार्य से आत्म–संतोष, खुशी, कार्य की पूर्णता पर गर्वित महसूस करता है। यह वह मानसिक अवस्था है, जिसमें व्यक्ति की कार्य से जुड़ी अपेक्षाओं और वास्तविक अनुभवों के बीच संतुलन की स्थिति को दर्शाती है। कार्य संतुष्टि व्यक्ति की वह मानसिक अवस्था को प्रदर्शित करती है जिसमें कि वह अपने कार्य, कार्य का वातावरण, विकास के अवसर, वेतन, सहकर्मियों तथा प्रशासन के प्रति संतुष्टि अथवा संतोष का अनुभव करता है।

विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ :

बिशी (1996) : शिक्षक की कार्य–संतुष्टि यह दर्शाती है कि वह अपने दैनिक कार्यों को करते समय कैसा महसूस करता है।

हॉपॉक (1935) : कार्य–संतुष्टि व्यक्ति के उन मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों का योग है, जो यह बताती है कि कोई व्यक्ति अपने कार्य से कितना संतुष्ट है।

लॉक (1976) : कार्य–संतुष्टि एक ऐसी सुखद या सकारात्मक भावनात्मक अवस्था है, जो व्यक्ति के अपने काय्र के अनुभवों के मूल्यांकन से उत्पन्न होती है।

कार्य के प्रति दृष्टिकोण – कार्य के प्रति दृष्टिकोण यह प्रदर्शित करता है कि व्यक्ति अपने कार्य को किस प्रकार से देखता है, उसमें कितनी रूचि लेता है

तथा उस कार्य के प्रति उसका भावनात्मक जुड़ाव कैसा है। यह व्यक्ति की उस मानसिक और भावनात्मक स्थिति को दर्शाता है, जो उसके कार्य, पेशे या नौकरी के प्रति उसे अनुभव, विश्वास, भावनाएँ और प्रतिक्रिया से जुड़ी होती है।

न्यादर्श – प्रस्तुत अध्ययन के लिए देवास जिले के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक पद्धति (Stratified Random Sample) द्वारा किया गया। जिसमें शासकीय विद्यालय के 60 तथा निजी विद्यालय के 40 शिक्षकों का चयन किया गया।

उपकरण निर्माण – प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित शोध उपकरण का उपयोग किया गया। शोध उपकरण निर्माण में शिक्षक के कार्य के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले 5 आयामों आधारित कथनों का निर्माण किया गया। प्रत्येक कारक में 10-10 कथनों का समावेश किया गया। ये कथन 5-बिन्दु लिकर्ट स्केल (पूर्णत: असहमत = 1, असहमत = 2, उदासीन = 3, सहमत = 4, पूर्णत: सहमत = 5,) के आधार पर आंकलित किये गये। ये आयाम हैं-

1. कार्य के प्रति संतुष्टि (10 कथन)
2. कार्य का अनुभव (10 कथन)
3. विकास के अवसर (10 कथन)
4. कार्य क्षेत्र का वातावरण (10 कथन)
5. कार्य की प्रेरणा (10 कथन)

उक्तानुसार उपकरणों के निर्माण में प्रत्येक आयाम के लिए निम्नानुसार कथनों का समावेश किया गया –

1. कार्य के प्रति संतुष्टि – इस उपकरण में शिक्षक के रूप में कैरियर का लक्ष्य, राष्ट्र निर्माता में हिस्सेदारी, शिक्षण में आनंद, विद्यार्थियों के साथ आनंद की अनुभूति, पुन: शिक्षक बनने की चाहत, समुदाय में प्राप्त सम्मान, अभिभावकों का विश्वास, विद्यार्थियों की उपलब्धि में वृद्धि तथा उच्च पद प्राप्ति पर संतुष्टि की भावना, स्वयं के शिक्षण कौशल से प्राप्त संतुष्टि आधारित कथनों का समावेश किया गया है।

2. कार्य का अनुभव – इस उपकरण में स्वयं के अनुभव से किये गये कार्यों के सकारात्मक परिणामों में गर्व के अहसास सम्बन्धी कथनों का समावेश किया गया है। जैसे विद्यार्थियों का शिक्षक के शिक्षण कार्य से संतुष्टि, विद्यालय प्रशासन एवं अभिभावकों द्वारा कार्य की सराहना व पुरस्कार, विद्यार्थी का शिक्षक की कक्षा में अधिक उपस्थिति, कार्य के अनुभवों का जीवन में उपयोग, विद्यार्थियों को सहयोग, समाज का शिक्षक के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण, विद्यार्थियों के परिवार व समाज के बीच स्वयं का होना तथा शिक्षण के अनुभव से ऊर्जा का संचार आदि जैसे कथनों का समावेश किया गया है।

3. विकास के अवसर – इस उपकरण में शिक्षक को प्राप्त विकास के अवसर से शैक्षिक कार्य के प्रति धारणा सम्बन्धी कथनों का समावेश किया गया है।जैसे पदोन्नति के अवसर, कौशल के प्रभावी उपयोग के अवसर, कार्य करने व निर्णयों के उपयोग की स्वतंत्रता के अवसर, प्रशिक्षण, सेमिनार व कार्यशालाओं के माध्यम से विकास के अवसर, चुनौतियों का सामना करने के अवसर, व्यक्तित्व, भाषा शैली व आत्मविश्वास की वृद्धि के साथ-साथ स्वयं को रोल मॉडल के रूप में प्रतिस्थापित करने के अवसर आदि जैसे कथनों का समावेश किया गया है।

4. कार्य क्षेत्र का वातावरण – विद्यालय के सकारात्मक प्रशासन व वातावरण, वरिष्ठ शिक्षकों का सम्मान, विद्यालय की नीतियों के क्रियान्वयन व सुझावों में सहभागिता, सहकर्मियों का आपसी सहयोग, शिक्षण कार्य व परिस्थितियाँ की अनुकूलता, आवश्यकता होने पर अवकाश के दिनों में भी विद्यालय जाना तथा विद्यार्थियों का कक्षा में बेसब्री से इंतजार करना आदि जैसे कथनों का समावेश किया गया है।

5. कार्य की प्रेरणा – इस उपकरण में शिक्षकीय कार्य के प्रति धारणा को जानने हेतु आवश्यक कथनों का समावेश किया गया है। जैसे वरिष्ठों से प्रेरणा, अन्य शिक्षकों की शिक्षण विधियों को सीखना, प्रशंसा से प्रेरित होना, विद्यार्थियों से तथा उनकी उपलब्धि स्तर में वृद्धि से प्रेरणा, समाज व द्यिार्थियों से प्राप्त सममान से प्रेरणा, शिक्षक कार्य से सदैव उर्जावान तथा मानसिक अध्यास से प्रेरणा तथा समाज व राष्ट्र की शिक्षक के रूप में प्रेरित होना आदि कथनों का समावेश किया गया है।

उपकरण निर्माण के पश्चात् शोधकर्ता द्वारा Google Forms तथा व्यक्तिगत रूप से न्यादर्श के लिए चयनित शिक्षकों पर उक्त उपकरण प्रशासित कर संकलित किये गये।

प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन **'शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का कार्य के प्रति दृष्टिकोण : सर्वेक्षण आधारित अध्ययन'** के लिए शोध कर्ता द्वारा निर्मित उक्त उपकरणों को **Google Forms** तथा व्यक्तिगत रूप से न्यादर्श के लिए चयनित शिक्षकों पर प्रशासित किया गया तथा तत्पश्चात् उनका संकलन किया गया। तालिका का निर्माण कर प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण (माध्य, मानक विचलन तथा सहसम्बन्ध) **IBM SPSS Verion 20.0** सॉफ्टवेयर से किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण – प्राप्त आंकड़ों का संकलन कर निम्नानुसार तालिकाओं का निर्माण किया गया तथा विश्लेषण किया गया।

तालिका क्र. 1: विभिन्न आयामों के बीच सहसम्बन्ध

आयाम	कार्य की सतुष्टि	कार्य का अनुभव	विकास के अवसर	कार्य क्षेत्र का वातावरण	कार्य की प्रेरणा
कार्य की संतुष्टि	1.00	.985	.911	.923	.906
कार्य का अनुभव	.985	1.00	.916	.908	.871
विकास के अवसर	.911	.916	1.00	.982	.971
कार्य क्षेत्र का वातावरण	.923	.908	.982	1.00	.992
कार्य की प्रेरणा	.923	.871	.971	.992	1.00

विश्लेषण – उक्त तालिका से स्पष्ट है कि समस्त आयामों के आपस में सहसम्बन्ध धनात्मक पाये गये। ये सहसम्बन्ध +.75 व +1 के बीच पाये गये अर्थात् इन आयामों के बीच सहसम्बन्ध की मात्रा अधिक है। ये सहसम्बन्ध यह भी प्रदर्शित करते हैं कि एक आयाम के बढ़ने से दूसरा आयाम भी उसी दिशा में बढ़ रहा है।

अत: स्पष्ट है कि शिक्षकों के कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण आयामों के धनात्मक सहसम्बन्धों पर निर्भर है। अत: शिक्षकों के कार्य का दृष्टिकोण उनके कार्य संतुष्टि, कार्य के अनुभव, विकास के अवसर, कार्य क्षेत्र का वातावरण तथा कार्य की प्रेरणा आदि आयामों पर प्रभाव डालता है।

तालिका क्र. 2 (अगले पृष्ठ पर देखे)

विश्लेषण – तालिका 2 से स्पष्ट हो रहा है कि अभिमतों के अनुसार माध्य व मानक विचलन में अन्तर है। किसी अभिमत में माध्य अधिक तो विचलन कम तथा किसी में माध्य कम तो विचलन अधिक पाया गया। निम्न तालिका

में सांख्यिकी के अनुसार माध्य व मानक विचलन की स्थिति, संकेत तथा विवेचना को प्रदर्शित किया गया है –

स्थिति	तालिका में संकेत	विवेचना
उच्च माध्य, कम मानक विचलन	***	अच्छा और स्थिर
माध्य व मानक विचालन में कम अन्तर	**	मध्यम
कम माध्य, उच्च मानक विचलन	*	कमजोर लेकिन समान प्रदर्शन

तालिका के अनुसार स्पष्ट है कि शिक्षक के कार्य के प्रति दृष्टिकोण शिक्षकों के अभिमत सहमत एवं पूर्णत: सहमत में समस्त आयामों अर्थात् कार्य की संतुष्टि, कार्य का अनुभव, विकास के अवसर, कार्य क्षेत्र का वातावरण, कार्य की प्रेरणा में अच्छे एवं स्थिर पाये गये। पूर्णत: असहमत, सहमत तथा उदासीन की स्थिति में शिक्षक के कार्य के प्रति दृष्टिकोण विकास के अवसर, कार्य क्षेत्र का वातावरण व कार्य की प्रेरणा सम्बन्ध में मध्यम पाये गये जबकि असहमत तथा उदासीन की स्थिति में कार्य अनुभव के सम्बन्ध मध्यम पाये गये।

पूर्णत: असहमत, असहमत तथा उदासीन की स्थिति में शिक्षक के कार्य के प्रति दृष्टिकोण कार्य की संतुष्टि में अत्यन्त कमजोर पाये गये तथा पूर्णत: असहमत में कार्य के अनुभव में भी अत्यन्त कमजोर पाये गये।

मुख्य निष्कर्ष – अध्ययन से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्नानुसार है –

1. शिक्षकों के कार्य के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित को प्रभावित करने वाले आयामों कार्य की संतुष्टि, कार्य के अनुभव, विकास के अवसर, कार्य का वातावरण तथा कार्य की प्रेरणा के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध है।
2. माध्य एवं विचलन की गणना से प्राप्त परिणामों के अनुसार 40 प्रतिशत आयामों के मध्य सम्बन्ध अधिक व स्थिर पाये गये तथा 44 प्रतिशत में मध्यम व 16 प्रतिशत में सम्बन्ध कमजोर पाये गये।

सुझाव – शिक्षकों का कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण न केवल विद्यार्थियों बल्कि विद्यालय, समाज और राष्ट्र के विकास में सहायक होता है। शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता की संज्ञा दी जाती है। अत: यह आवश्यक है, कार्य के प्रति उनके सकारात्मक दृष्टिकोण में वृद्धि के लिए विभिन्न प्रयास किये जाने चाहिए। कुछ सुझाव निम्नानुसार हैं –

1. मनोवैज्ञानिक सहयोग – यह सच है कि शिक्षक विद्यार्थियों के भावी भविष्य को बेहतर बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करते हैं। शिक्षण के लिए वे स्वयं की तैयारी, विद्यार्थियों को मार्गदर्शन, अच्छे विचार, परामर्श, मूल्यांकन आदि तथा विभिन्न अन्य गैर शैक्षणिक कार्य भी करते हैं। इन सब कार्यों के साथ वे कभी–कभी तनाव, थकान आदि भी महसूस करते हैं। अत: आवश्यक है कि उनके लिए भी तनाव प्रबंधन, काउंसिलिंग, मनोरंजन आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जावे।

2. कैरियर उन्नति – कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को उनकी योग्यता अनुरूप कार्य तथा पदोन्नति दी जावे। इसके लिए पारदर्शी पदोन्नति नीति तथा मेंटरशिप प्रणाली का विकास किया जावे।

3. व्यावसायिक विकास – विकास के लिए आवश्यक है नवीन ज्ञान की प्राप्ति करना। अत: शिक्षकों के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण, सेमिनार, कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए, ताकि वे नवीन ज्ञान प्राप्त करने के साथ–साथ उन विधियों, प्रविधियों को सीख सकें, जो उनके कार्य को सरल और गुणवत्ता पूर्ण बना सके।

4. सकारात्मक पुनर्बलन – किसी भी कार्य की गुणवत्ता पूर्ण प्राप्ति के आवश्यक है कि उस कार्य को करने वाले को सराहा जावे। अत: शिक्षकों के सकारात्मक दृष्टिकोण व शिक्षा के स्तर में वृद्धि के आवश्यक है शिक्षकों को समय–समय पर पुरूस्कृत किया जावे। इसके साथ ही समाज का उनके प्रति नजरिया भी सम्मानपूर्वक होना चाहिए।

5. कार्य का बँटवारा – कई बार एक ही शिक्षक पर अधिक काम का बोझ, कार्य के प्रति उसके दृष्टिकोण को नकारात्मक कर देती है। अत: कार्य के समान बँटवारे के लिए स्टाफ की पूर्ति होना आवश्यक है। इसके लिए स्टॉफ की नियुक्ति सम्बन्धी विषयों पर भी विचार किया जाना चाहिए।

6. वेतन सम्बन्धी सुझाव – शिक्षकों को विद्यार्थी के भावी भविष्य की नींव की संज्ञा दी जाती है और इसके लिए वे पूर्ण प्रयास भी करते हैं। एक साथ 40 से 60 विद्यार्थियों को कक्षा में पढ़ाना, सिखाना व अनुशासन भी बनाना केवल शिक्षक ही कर पाते हैं। किन्तु वेतन सम्बन्धी विसंगति से कभी–कभी वे भी विचलित होते हैं। अत: आवश्यक है कि उनके कार्यों को समाज व विद्यार्थी के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण मानते हुए वेतन व्यवस्था की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Kumar, R., and Govinda, R. (2018). *Teachers and their Work in Schools: Changing context. New Delhi: NUPEA.*
2. UNESCO (2021). *Teachers in Education 2030 Framework for Action. Paris: UNESCO.*
3. Khan, Tasneem, and Kaur Jaspreet (2021). *Job Satisfaction of Teacher Educators in Relation to Professional Commitment. International Journal of Indian Psychology, ISSN 2348-5396 (Online), ISSN: 2349 -3429 (Print).*
4. National Education Policy 2020. Ministry of Human Resource Development, Government of India.

तालिका क्र. 2: विभिन्न आयामों के माध्य, मानक विचलन

क्र.	अभिमत कारक/परि.	पूर्णत: असहमत		असहमत		उदासीन		सहमत		पूर्णत: सहमत	
		माध्य	मानक विचलन	माध्य	मानक विचलन	माध्य	मानक विचलन	माध्य	मानक विचलन	माध्य	मानक विचलन
1.	कार्य की संतुष्टि	6.5*	9.73	11.0*	11.97	7.0*	7.888	33.5***	10.55	42.0***	11.59
2.	कार्य का अनुभव	9.00*	9.35	7.90**	7.37	10.2**	4.442	31.9***	11.48	41.0***	9.87
3.	विकास के अवसर	17.8**	9.48	13.5**	7.01	5.40**	3.306	29.6***	5.83	35.5***	11.85
4.	कार्य क्षेत्र का वातावरण	16.3**	9.66	15.6**	8.36	7.80**	2.347	30.6***	9.40	30.7***	11.22
5.	कार्य की प्रेरणा	14.8**	6.35	17.1**	7.06	3.80**	2.699	32.0***	7.21	32.3***	11.26